जयंतिकर चर्चा

जयंतिकर प्रसाद हिंदी के सहायक सति होने के साथ-साथ एक समाज के नागरिक और समाज सेवक भी थे। उनका जन्म भास्कर के एक समाज में हुआ। प्रसाद जी बहुत ही हीरो मान्यता बाल्य, गुपर नितान्त रंग वाले थे। अपनी भाषात्मक शृंगारकला के द्वारा उनके शरीर के लिए लोगों में मद्देनज़र होते थे। संवेदनशील होने के कारण समाज के दुरुस्तों पर सवाल उठाते उनके लिए कोई अनुशासन नहीं था। किसी भी गल को बढ़ाने के लिए उनकी बदलतियों ने भी साहित्य में विशेष महत्व प्राप्त किया है।

पुस्तकार कहानी में भी उनकी वही विचारधाराएँ स्वतंत्रता विषय देती हैं।
बरसात का मौसम। आकाश में काले-काले बादलों की घुमड़। बिजली की गड़गड़ाहट। ज्वोर से हवा चली और कुछ बूंदें बरसीं। जयघोष के बीच महाराज की सवारी आई।

आज कोशल देश में कृषि-उत्सव मनाया जा रहा था।
इस दिन महाराज को एक दिन के लिए किसान बनना पड़ता था। ज़मीन के एक चुने हुए दुकड़े में वे हल चलाते। फिर बीज बोते थे।

ज़मीन के असली मालिक को ज़मीन की चार गुणा रकम देते थे। और खेत राजा के हो जाते थे।
उस साल मधूलिका की जमीन चुनी गई थी। कोशल के सभी निवासी उसकी जमीन पर जमा हो रहे थे।

राजा सवारी से उतरे। सुन्दर लड़कियों ने मंगलगान गाया। पंडितों ने मंत्र पढ़े। फिर राजा ने जमीन पर हल चलाना शुरू किया। लोगों ने फूल और खीर बरसाये।

कोशल का यह उत्सव दूर-दूर तक मशहूर था।
इसमें भाग लेने के लिए दूसरे राज्यों से भी लोग आते थे। उस साल मगध का राजकुमार अरुण आया था।

हल चलाने के बाद राजा को बीज बोना था। धार में बीज उठाये मधूलिका राजा के साथ चल रही थी। सब लोग राजा को देख रहे थे। लेकिन अरुण मधूलिका को!
राजा ने धीरे-धीरे सारे बीज बो दिये। थाल खाली हो गया। राजा ने उसमें कुछ सोने के सिक्के डाल दिये। यह ज्ञान की कीमत थी।

मधुलिका ने थाली को प्रणाम किया। फिर सिक्के उठाकर राजा पर वार दिए। और कहा, 'महाराज! यह मेरे बाप-दादा की ज्ञान है। मैं इसे ऐसे ही आप को देने को तैयार हूँ। पर बेचूँगी नहीं।'
यह सुनते ही बूढ़े मंत्री चीखे, ‘नासमझ! राजा की कृपा का अपमान मत कर। आज से तू राज्य की सुरक्षा में है। इसे अपना भाग्य समझ।’
राजा ने पूछा, ‘कौन है यह लड़की?’

‘महाराज! यहं बीर सिंहमित्र की बेटी है। सिंहमित्र जिसने वाराणासी की लड़ाई में कोशल को मगध से बचाया था।’

राजा कुछ सोचने लगे। फिर बिना कुछ कहे अपने शिविर की ओर लौट गये।

जयघोष के साथ उत्सव पूरा हुआ।
रात हुई पर राजकुमार अरुण की आँखों में नींद कहाँ ? अपने घोड़े पर सवार वह बाहर निकल पड़ा। घूमते-घूमते एक बरगद के पेड़ के पास पहुँचा।

पेड़ के नीचे, हाथ पर सिर रखकर मधुलिका सो रही थी। सोई हुई मधुलिका बहुत ही सुंदर और भोली जान पड़ती थी! अरुण चुपचाप, एकटक उसे देख रहा था।
अचानक कोयल बोल उठी। मधूलिका की नींद दूरी। सामने एक अपरिचित को देख वह उठ बैठी।

अरुण बोला, 'मैं मगध का राजकुमार हूँ। आज सुबह तुम्हें उत्सव में देखा था। तब तुम्हारे साहस और सुंदरता का पुजारी बन गया हूँ।'

'मज्जाक न करो, राजकुमार। मैं आज बहुत दुखी हूँ। मेरा अपमान न करके मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो,' कहकर मधूलिका वहाँ से चल दी।
चोट खाकर राजकुमार लौट गया। मधूलिका कुछ देर तक उड़ती हुई धूल को देखती रही। आँखों में आँसू आ गये।

मनही मन मधूलिका ने जीवन को एक नए सिरे से शुरू करने का निश्चय किया।
अपनी जमीन खोकर मधूलिका दूसरे के खेतों में कड़ी मेहनत करने लगी। रुखा-सूखा जो मिलता खाकर अपनी झोपड़ी में सो जाती।

इस तरह तीन साल बीत गये।

सर्दियों की एक रात। मेघों से भरा आकाश।
रह-रहकर बिजली चमक उठती थी। मधूलिका अपनी झोपड़ी में बैठी ठिठुर रही थी। आज बहुत दिनों बाद उसे बीती हुई वह बात याद आई।
राजकुमार अहुण की प्यार-भरी बातें! अब उसे दुख हो रहा था - उसे अरुण की बात मान लेनी चाहिए थी।
तभी, दरवाजे पर खट-खट हुई। 'कौन है यहाँ? राही को शरण चाहिए,' वाहर से आवाज आई।

दरवाजा खोलते ही बिजली चमकी। मधूलिका चिल्ला उठी, 'राजकुमार!' अरुण भी उसे देखकर हैरान था। कुछ रुक कर बोला, 'मैं बागी हूँ। मुझे मगध से निकाल दिया गया है। मैं कोशल में रहने आया हूँ।'
मधूलिका हंस कर बोली, ‘आपका स्वागत है।’

बारिश बंद हो चुकी थी। कोहरे से धुली हुई चाँदनी में अरुण और मधूलिका बरगद के पेड़ के नीचे जा बैठे। मधूलिका आज बहुत खुश थी। अरुण कुछ संभल-संभल कर बातें कर रहा था।

‘मैं नया राज्य स्थापित करूँगा। तुम्हें राजरानी बनाऊँगा। तुम मक्खन घास प्यार करती हो न, मधूलिके!’ अरुण ने उसके हाथों को दबाकर पूछा।
मधूलिका आज बहुत खुश थी। राजकुमार अरुण के पास बैठकर वह अपने सभी दुःखों को भूल-सी गयी थी। सपनों की दुनिया में खोई थी मधूलिका जब अरुण बोला, ‘नये राज्य की स्थापना करने में तुम्हें मेरी मदद करनी होगी।’

‘जो कहोगे, वही कहेंगी!’ मधूलिका ने कहा।

और अरुण उसे अपनी योजना बताने लगा।
मधूलिका राजा से मिलने उनके महल में गई। महाराज को प्रणाम करके बोली, 'तीन बरस हुए देव! मेरी जमीन खेती के लिए ली गई थी।'

'अच्छा तो तुम उसकी कीमत माँगने आई हो। बोलो, तुम्हें क्या चाहिए?'

'मुझे किले के दक्षिणी नाले के पास अपने खेत के बराबर की जमीन चाहिए।'

राजा मान गए।

किले के दक्षिणी नाले के पास की जमीन सैनिक-महत्त्व रखती थी। वहाँ सैनिक किले पर पहरा देते थे। जमीन मधूलिका को मिल जाने के बाद सैनिक वहाँ से हटा लिए गये।
अरुण अपनी सैनिक-दुकड़ी के साथ घने जंगल में छुप गया। वह वहाँ से राजा के किले पर हमला करने वाला था। यहीं उसकी योजना थी।

मधुलिका का दिल उसे धिक्कार रहा था। ‘मेरे पिता ने कोशल को बचाया था। उनकी बेटी होकर मैं दुश्मन की मदद कर रही हूं। नहीं, कभी नहीं!’
यह सोचकर वह इधर-उधर भागने लगी। सामने देश के सेनापति अपनी सैनिक-टुकड़ी के साथ आते हुए दिखाई दिये। वह उनके पैरों पर गिर पड़ी और बोली, 'आज रात किसे पर चढ़न खोगी। डाकू दक्षिणी नाले की ओर से आएंगे। जल्दी कुछ कीजिये।'

सैनिक दक्षिणी नाले की ओर भागे।
हमले की तैयारी करता हुआ अरुण पकड़ा गया।

इस तरह उस की योजना बेकार हो गई। उसे बंदी बना लिया गया। राजा ने उसे प्राण-ढंड दिया।

फिर मधुलिका बुलाई गई। वह पागल-सी आकर खड़ी हो गई। राजा ने कहा, ‘मधुलिका, मनचाहा पुरस्कार माँग।’

‘मुझे भी प्राण-ढंड मिले!’ कहती हुई वह बंदी अरुण के पास जा खड़ी हुई।